B.A II (Hindi) Hons. हिंदी साहित्य के इतिहास का कालविभाजन का श्रेय
डॉ० सतीश चन्द्रपाठक

रचकर इस काल में काव्यसृजन हो रहा था। इसलिए भी इसे रीतिकाल का नाम दिया गया।

इसी बीच मुगलशासन के कमजोर होने तथा अंग्रेजों के भारत में आगमन के कारण देश का राजनैतिक परिवेश सर्वथा परिवर्तित हो गया। अंग्रेजों की विस्तारवादी नीति के कारण छोटे राज्यों को अंग्रेजी राज्य में मिला लिया गया जिससे छोटे राज्यों का अस्तित्व ही समाप्त हो गया। इसका साहित्य पर यह प्रभाव पड़ा कि राजाश्रय में पलने वाले कवियों की संख्या अत्यन्त सीमित हो गयी और कालान्तर में समाप्त ही हो गयी। अंग्रेज अपने साथ आधुनिक मशीनी उपकरण को लेकर आए थे जैसे छापाखाना, बिजली चालित मशीनें इत्यादि जिसने सामाजिक जीवन को तो प्रभावित किया ही, साहित्य को भी प्रभावित किया। इसी प्रकार अंग्रेज अपने साथ अपना साहित्य लेकर आए थे तथा उसका प्रचार प्रसार भी किया। अपनी अलग भाषाप्रणाली को भी यहाँ के देश भर में लागू किया। अपने अधिकारियों के लिए हिन्दी की किताबें तैयार करवायी तथा उनकी प्रशासनिक क्षमता बढ़ाने के लिए फोर्ट विलियम कॉलेज कलकत्ता की स्थापना की। इसका प्रभाव यह पड़ा कि हिन्दी साहित्य में गद्य का वर्चस्व बढ़ने लगा। अब तक हम भारतीय केवल काव्य के अनुशीलन के ही अभ्यासी थे किन्तु अब गद्य की ही प्रधानता होती जा रही थी। इसी बीच हिन्दी साहित्य में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का प्रादुर्भाव हुआ। यह हिन्दी साहित्य के लिए ऐतिहासिक घटना सिद्ध हुई। भारतेन्दु ने साहित्य की प्रायः समस्त विधाओं में रचना की - नाटक, उपन्यास, कहानी, एकांकी, निबन्ध, और कविता में भी उन्होंने अपनी श्रेष्ठ रचनाओं से हिन्दी साहित्य को समृद्ध किया। उन्हीं के समकालीन राजा शिवप्रसाद सितारे हिन्द ने भी हिन्दी साहित्य के संवर्धन में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसके बाद हिन्दी साहित्य में आचार्य महावीर

notes
Phone
email
website

प्रसाद द्विवेदी का आगमन हुआ। इन्होंने सरस्वती पत्रिका के माध्यम से न केवल हिन्दी साहित्य का निर्माण किया वरन साहित्यकारों का भी निर्माण किया।

हिन्दी साहित्य के लिए आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी एवं सरस्वती पत्रिका का ऐतिहासिक महत्व है

आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने हिन्दी साहित्य और हिन्दी भाषा दोनों का ही उपकार किया क्योंकि अब तक हिन्दी साहित्य में काव्य की ही प्रधानता थी और इस भाषा में गद्य के अनुरूप व्याकरण एवं अभिव्यक्ति क्षमता का अभाव था। गद्य साहित्य के अस्तित्व में आने के बाद भी काव्य की भाषा ब्रजभाषा ही थी। ऐसे में यह स्थिति अत्यन्त हास्यास्पद थी कि गद्य तो खड़ी बोली में लिखा जाय और काव्य ब्रजभाषा में। आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के सामने भाषा की एकता की एक बहुत ही महत्वपूर्ण चुनौती थी। गद्य की भाषा की पूर्व पीठिका भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने इनके पूर्व ही बना दी थी किन्तु काव्यभाषा के रूप में इन्होंने भी ब्रजभाषा का ही प्रयोग किया था। इसके कारण भी भाषा की चुनौती अनेक गुना बढ़ गयी थी। रीतिकालीन साहित्य में काम या विषय वस्तु की कमी थी। आचार्य द्विवेदी अपने वैयक्तिक जीवन में कठोर अनुशासन के पक्षधर थे। इसी कठोर अनुशासन का सिद्धान्त इन्होंने साहित्य में भी अपनाया। रीतिकालीन साहित्य अत्यन्त शृंगारी कामुक एवं विकृत मनोवृत्ति की देन थी। उसका आस्वाद समाज एवं परिवार के लिए अनुकूल नहीं था। इसकी प्रतिक्रिया में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने साहित्य से शृंगार को बहिष्कृत ही कर दिया। यही कारण है कि इस काल में राष्ट्रप्रेम, अतीत का गुणगान, नीति और उपदेश

notes
Phone
email
website